3.

# आदिकाल की पृष्ठभूमि :-

## आदिकाल के विभिन्न क्षेत्र :-

राजनीतिक क्षेत्र → भारतीय इतिहास का यह युग राजनीतिक की दृष्टि से अव्यवस्था; गृहकलह और पराजय का युग है। एक ओर तो विदेशी आक्रमण और दूसरी ओर रजवाड़ों की पारास्परिक भीतरी कलह घुन के समान इसे खोखला करती रही।

सम्राट हर्षवर्धन (सन् 606 - 643) के मृत्यु के बाद केन्द्रिय सत्ता का ह्रास हो गया। और राजसत्ता डांवाडोल हो गई। 9 · 9वीं शती में "मिहिर भोज" ने उसे फिर समेटा और सुव्यवस्था का क्षेत्र बनाया। अफगानिस्तान तब भारत के अंतर्गत था। अब मुसलमानों ने "सिंध" को प्रवेश द्वार बनाना चाहा और सन् 710-11 में मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में सिंध पर धावा किया गया और सिंध के राजा दाहिर और पुत्र तिल-तिल लड़े परन्तु अंत में हार गये। जनता इनके आदत से नाखुश थी। फिर 839/7 इसवीं में तात्कालीन अरब सेनापति ने सिंध से कच्छ, दक्खिनी, मारवाड़, उज्जैन और उत्तरी गुजरात को ध्वस्त कर लाट (दक्षिणी गुजरात) में प्रवेश किया। वहां के चालुक्य सेना पति ने अरब सेना का पूर्णतया संहार किया। अरब सिंध तक ही सीमित रहे। 9वीं शती में वहां उनके छोटे-मोटे सरदार ही रह गये।

उत्तरी भारत में 10वीं 11वीं शताब्दी में प्रतिहारों का राज्य बना रहा। 10वीं शताब्दी के अंत में गजनी का राज्य महमूद गजनवी के हाथ आया।

11वीं 12वीं शताब्दी में दिल्ली में तोमर, अजमेर में चौहान और कन्नौज में गाहड़वालों की शक्तिशाली राज्य थे। 1150 में अजमेर के बीसलदेव चौहान ने तोमरों से दिल्ली और हांसी (झांसी) से लेकर

हिमालय तक अपना राज्य फैला लिया और पंजाब से तुर्कों को पीछे धकेला।

गजनी ने तुर्कों का अंत करके शहाबुद्दीन मुहम्मद गौरी ने भारत जीतने की ठानी। कई-बार हार कर भी हिम्मत न हारी। अजमेर का शक्तिशाली राजा पृथ्वीराज चौहान उस समय विदेशी आक्रमण के प्रति पूर्णतः जागरूक न था। जब गौरी ने गुजरात पर आक्रमण किया तब उसकी सेना अजमेर की पश्चिमी सीमा आबू तक जाकर लौट आई और गौरी को रोकने की ओर ध्यान न दिया बल्कि उसी समय उसने जुझौती के राजा परमर्दिदेव से युद्ध छेड़ा, जिसमें दो देशी राजाओं के शक्ति का अपव्यय हुआ। कन्नौज के राजा जयचन्द ने गौरी को पृथ्वीराज पर आक्रमण करने के लिए उकसाया और उसके षड्यन्त्रों के फलस्वरूप गौरी पृथ्वीराज चौहान को पराजित करने मे सफल भी हो गया। चौहान के पतन व मृत्यु से ही गौरी की पिपासा शान्त न हुई बल्कि धीरे-धीरे उसने कन्नौज व कालिंजर पर भी अधिकार स्थापित कर लिया। इसी प्रकार दिल्ली में तुर्क सल्तनत स्थापित हुई और शनैः-शनैः उसका विस्तार होने लगा तथा विरोध के बावजूद मुस्लिम पताका प्रायः सम्पूर्ण उत्तरी भारत में शनै-शनै फहराने लगी।

**निष्कर्ष :—** उपर्युक्त भारतीय राजनीति स्थिति देखते हुए हम कह सकते हैं कि हमारे देश में राष्ट्रीयता की भावना संकुचित थी। देश खण्ड-खण्ड राज्यों में विभाजित था। अपने दस-पचास गांवों को ही राष्ट्र समझते थे। और आपस में सभी राजा ईर्ष्या-द्वेष से भरे हुए थे। कुल मिला जुला कर कहा जा सकता है कि ये सभी राजा में मेल रहता तब हमारा देश का मानचित्र आज कुछ और विकसित रहता।

अवलोकित
8-3-2020

Scanned with CamScanner